بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-01.09.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों की रोशनी में जलसे में शामिल होने वालों को स्वर्णीय उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 01 सितम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अलहम्दुलिल्लाह आज अहमदिया जमाअत जर्मनी का जलसा सालाना विराट स्तर पर आयोजित हो रहा है। अल्लाह तआला सब जलसे में शामिल होने वालों को जलसे के उद्देश्य का करने वाला प्राप्त करने वाला बनाए। जलसे के आयोजन का एक महान उद्देश्य जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया है तथा बड़े दर्द से इसको अभिव्यक्त किया है, वह यह है कि आप अलै. की बैअत में दाख़िल होने वाले दीन का ज्ञान सीखें, रूहानियत में उन्नति करें। अल्लाह तआला से सम्बंध एवं प्रेम में बढें, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण अनुसरण करने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस वर्ष अहमदिया जमाअत जर्मनी को स्थापित हुए सौ साल भी हो गए हैं परन्तु इस बात पर ख़ुश होने के साथ ही हमें यह भी देखना चाहिए कि इन सौ वषा में हमने क्या पाया? हमने अपने ईमानों की किस सीमा तक सुरक्षा की? यदि हमने अपने तथा अपनी संतानों के अन्दर यह पवित्र बदलाव पैदा करने का प्रयास किया है तो यही वह वास्तविक अनुग्रह जो हमें इस अवसर पर अदा करना चाहिए। इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश आपके सामने रखूंगा जो हमें हमारे लक्ष्य की ओर मार्ग दर्शन करने वाले हैं। आप अलै. फ़रमाते हैं- यह मत समझो कि केवल बैअत कर लेने से ही ख़ुदा प्रसन्न हो जाता है। यह तो केवल छिलका है, गूदा तो इसके अन्दर है।

अतः जो बैअत तथा ईमान का दावा करता है उसे अपने आपको टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका ही हूँ या गूदा।

दीन को दुनिया पर प्रमुखता देना क्या है? इसकी व्याख्या करते हुए हुज़ूर अलैस्सलाम फ़रमाते हैं- मेरा यह आश्य कदाचित नहीं कि मुसलमान सुस्त हो जाएँ, इस्लाम किसी को सुस्त नहीं बनाता, अपने व्यवसाय तथा नौकरियों में भी व्यस्त हों। किन्तु मैं यह नहीं पसन्द करता कि ख़ुदा के लिए कोई समय भी उनका ख़ाली न हो। नमाज़ों के समय पर नमाज़ों को न छोड़ें, हर एक मामले में दीन को प्राथ्मिकता दें। केवल संसारिकता ही लक्ष्य न हो, मूल उद्देश्य दीन हो, फिर दुनिया के काम भी दीन ही होंगे। फ़रमाया- उन्नति का एक ही मार्ग है कि ख़ुदा को पहचानें तथा उस पर जीवित ईमान पैदा करें।

दीन को हर हाल में प्रमुख करने के विषय में आप अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि देखो दो प्रकार के लोग होते हैं, एक तो वे जो इस्लाम को क़बूल करके दुनिया के कारोबार तथा व्यापारों में व्यस्त हो जाते हैं, शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरा यह अभिप्रायः नहीं कि व्यापार करना मना है, सहाबा व्यापार भी किया करते थे किन्तु दीन को दुनिया पर प्रमुख रखते थे उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो इस्लाम से सम्बंधित सत्य ज्ञान जो विश्वास से उनके दिलों को परिपूर्ण कर दे, उन्होंने प्राप्त किया। यही कारण था कि वे किसी मैदान में भी शैतान के हमले से न डगमगाए।

फ़रमाया- मैं अधिक आशा उनसे करता हूँ जो दीन की प्रगति एवं रूचि को कम नहीं करते, जो उस रूचि को कम करते हैं मुझे आशंका होती है कि कहीं शैतान उन पर क़ाबू न पा ले, इस लिए कभी सुस्त नहीं होना चाहिए।

फ़रमाया- ग़ैर मुस्लिमों में क़ुर्आन शरीफ़ जलाने का साहस क्यूँ पैदा हुआ, इस लिए कि हमने अपने व्यवहार में क़ुर्आन करीम की शिक्षानुसार कर्म करना छोड़ दिया तथा इसी कारण से उनमें साहस पैदा हुआ। जो ज्ञान में उन्नति करना चाहता है उसको चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ़ को ध्यान पूर्वक पढ़े। जहाँ समझ में न आए, किसी से पूछ ले। क़ुर्आन शरीफ़ एक दीन का समुद्र है जिसकी तली में बड़े बड़े बहुमूल्य तथा मूल्यवान रतन मौजूद हैं। अतः हमें निरीक्षण करना चाहिए कि कितने हैं जो ध्यान पूर्वक क़ुर्आन को पढ़ते हैं तथा फिर इसके अनुसार कर्म करने का प्रयास करते हैं।

फ़रमाया- सत्य धर्म की जड़ ख़ुदा पर ईमान है और ख़ुदा पर ईमान चाहता है कि सच्चा संयम हो, ख़ुदा का भय हो। तक़्वा वाले को ख़ुदा कभी नष्ट नहीं करता, वह आसमान से उसकी सहायता करता है, फ़रिश्ते उसके सहयोग के लिए उतरते हैं। इससे बढ़ कर और क्या होगा कि मुत्तक़ी से चमत्कार प्रकट हो जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- वह नमाज़ बुराईयों को दूर करती है जो अपने अन्दर एक सच्चाई की आत्मा रखती है तथा फ़ैज़ का प्रभाव उसमें मौजूद है, वह नमाज़ निश्चित ही

बुराईयों को दूर करती है। नमाज़ का गूदा एवं आत्मा वह दुआ ह जा एक आनन्द एवं मादकता अपन भोतर रखतो ह।

अतः हमं अपन निरोक्षण करन को आवश्यकता ह कि क्या हम नमाज़ां मं आनन्द पाप्त करत हं, क्या हम पूरा भरासा कवल साधनां पर ता नहों रखत। यदि हम नमाज़ां को सुरक्षा करन वाल हं ता हम बअत का हक अदा करन वाल हं अन्यथा चिंतापूण अवस्था ह।

ज्ञान एवं विवक मं उन्नति तथा मुशिद व मुरोद अथात गुरु एवं चल क बार मं हज़ूर अलहिस्सलाम फरमात हं- गुरु तथा चल क सम्बध अध्यापक एवं विद्याथों क उदाहरण स समझ लन चाहिएं जस विद्याथों अपन अध्यापक स लाभान्वित हाता ह उसो तरह चला अपन गुरु स, परन्तु चला अपन अध्यापक स सम्बध ता रख किन्तु अपनो शिक्षा मं प्रगति न कर ता लाभ प्राप्त नहों कर सकता, यहो हाल मुरोद का ह। अतएव इस विषय मं सम्बंध पदा करक अपन विवक एवं ज्ञान का बढाना चाहिए। सत्य क अभिलाषो का एक स्तर पर पहुंच कर कदाचित ठहरना नहों चाहिए अन्यथा धिक्कारा हुआ शतान किसो आर दिशा मं लगा दगा।

आप अलहिस्सलाम फरमात हं कि यदि मरो बअत को ह ता मुझ हकम आर अदल (अन्तिम एवं निणायक अस्तित्व) स्वोकार करा। इस बात का विश्वास रखा कि जा बात मं कहंगा वह खुदा तआला तथा उसक रसुल मकबुल सल्लल्लाह अलहि वसल्लम को शिक्षा क अनुसार कहंगा। फरमाया कि जिन लागां न मरा इंकार किया ह तथा जा मुझ पर आपत्ति करत हं उन्हांन मुझ पहचाना नहों तथा जिसन मुझ स्वोकार किया तथा फिर आपत्ति करता ह वह आर अधिक दभागा ह कि दख कर अंधा हुआ।

आप अलहिस्सलाम अपन आन का कारण एवं उद्देश्य बयान करत हुए फरमात हं- मर आन का मूल उद्देश्य एवं लक्ष्य यहो ह कि ताहोद, अखलाक एवं रूहानियत का फलाऊं। ताहोद का अभिप्रायः यह ह कि खुदा तआला का हो अपना प्रिय, अनुकरणोय एवं उद्देश्य मान लिया जाव।

अखलाक का अथ यह ह कि जितनो शक्तियां इंसान लकर आया ह उनका अपन उचित स्थान एवं उचित अवसर पर खच किया जाव, यह नहों कि कुछ शक्तियां का पणतः बकार छाड दिया जाव तथा कुछ पर अधिक ज़ार दिया जाव।

रूहानियत स अभिप्रायः व संकत एवं निशानियां हं जा खुदा तआला क साथ सच्चा सम्बंध पदा हान पर अपन प्रभाव छाडत हं। अतः हर अहमदो का इस पर विचार करन को आवश्यकता ह कि ताहोद का उसक दिल मं कितना अधिक ज़ार ह, भावना ह। इसो तरह जब हम मस्जिद बना रह ह ता इन्ह आबाद करन को भो चिता हानो चाहिए। इसो तरह उच्चतम शिष्टाचार को अभिव्यक्ति हर अहमदो स हानो चाहिए। य उच्च शिष्टाचार हं जा हमारा सन्दश पहुंचान मं अति महत्त्व पूण भूमिका द सकत हं। फरमाया- रूहानियत क स्तर का तब पता चलगा जब अल्लाह तआला तथा उसक बन्दा क हक अदा करन क उच्च स्तर कायम हांग।

क्या हमारा खदा तआला स सदृढ सम्बंध पदा हा गया ह? क्या हमारो नमाज़ां क उच्चतम स्तर कायम हा गए ह? क्या हम नमाज़ां क समय पर सांसारिक व्यस्तता का छाड कर नमाज़ क लिए उपस्थित हा जात ह अथवा कवल मस्जिद बनान पर ज़ार ह? क्या हम क़आन करोम को तिलावत म नियमबद्ध ह? क्या हम क़आन क आदशा का खाज खाज कर उनक अनसार कम करन को काशिश करत ह? क्या हम अपन बच्चां का दोन स जाडन का भरसक प्रयत्न कर रह ह? क्या हम अपन बच्चां को कवल सांसारिक शिक्षा को चिंता ह अथवा उनको दोन को भो चिंता ह? क्या हमार उच्च शिष्टाचार, आपस क सम्बंध वह स्तर प्राप्त कर चक ह जा **राहमाउ बनाहम** का दश्य दिखाए हम? क्या उच्चतम शिष्टाचार क नमन अन्य लागां पर प्रकट करक उन्ह इस्लाम को शिक्षा स हम अवगत कर रह ह? अतः पहल ता य निरोक्षण कर कि अल्लाह आर उसक प्राणियां क हक अदा करन को भावना का किस सोमा तक हमन प्राप्त कर लिया ह।

हम यह दावा लकर उठ ह कि हमन दनिया क दिल जोतन ह। हमन दनिया का खदा तआला क एक अकला हान को आस्था का स्वोकार करा दना ह। दनिया का महम्मद रसल्ल्लाह सल्लल्लाह अलहि वसल्लम क कदमां म डालना ह। अतएव इस संदभ म हमम स हर एक का अपन निरोक्षण करन चाहिए तथा एक नए उत्साह क साथ नइ शताब्दो म दाखिल हाना चाहिए कि हम दोन का दनिया पर प्रमख रखत हए अपन इस उद्दश्य का प्राप्त करन का भरसक प्रयास करंग तथा अपनो संतानां एवं पोढियां का भो इसको प्ररणा दत रहग तथा उनका इस प्रकार प्रशिक्षण करंग कि खदा तआला स सम्बंध को यह जाग एक पोढो स दसरो पोढो का लगतो चलो जाए। अल्लाह तआला हम इसको ताफोक अता फरमाए, आमोन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131